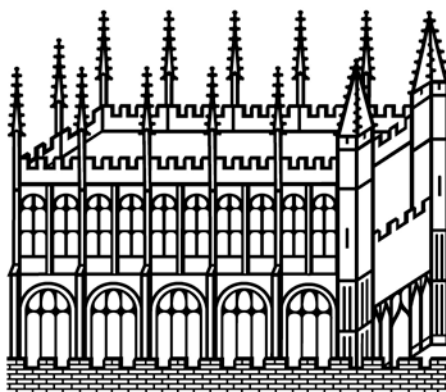




Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

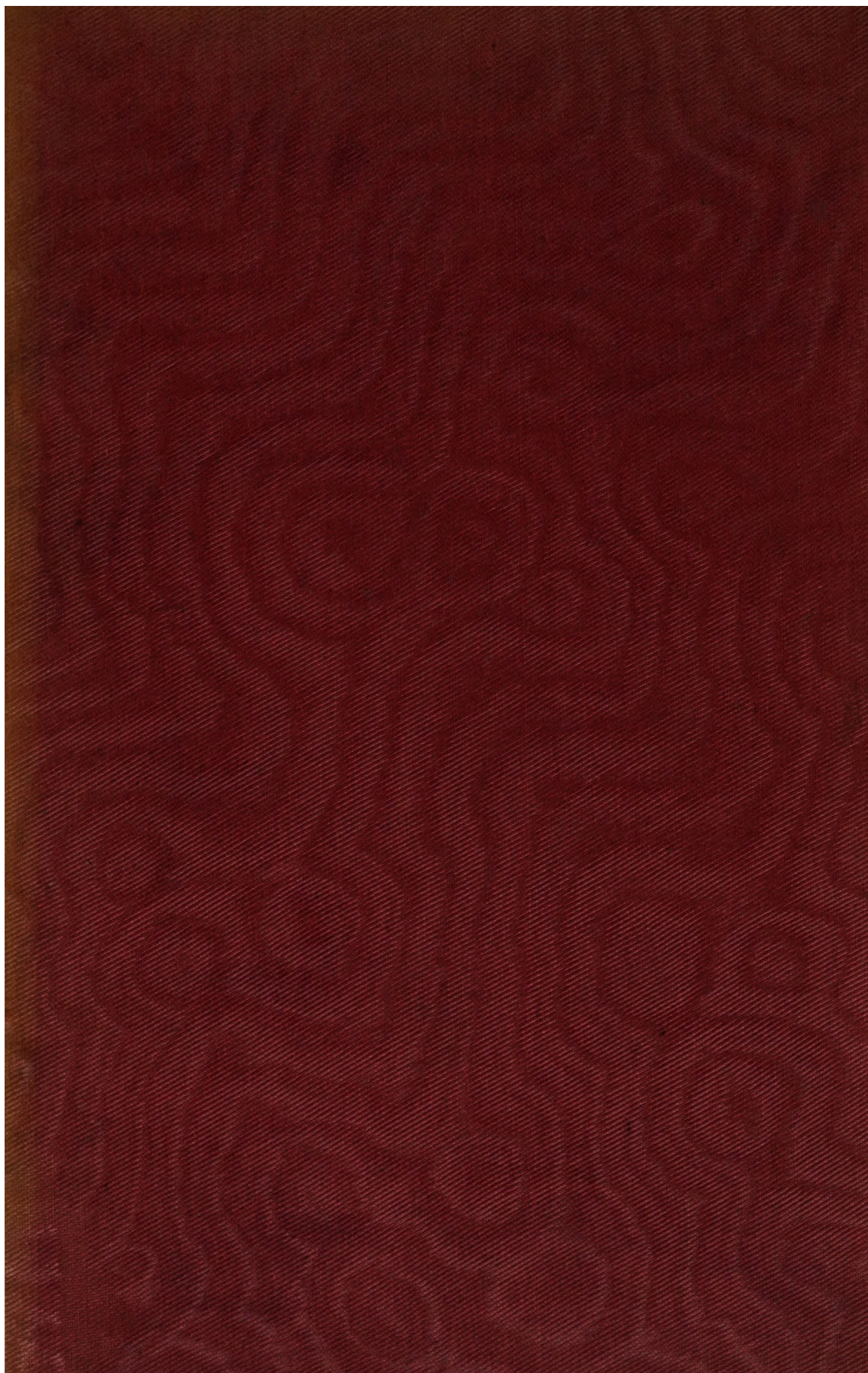
This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

<http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks>



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-
ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.



Hindgen. 38/1

13. C. 21 (a)

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.

Presented

by

Munshi Abdul Kishore.

बालशिक्षा ॥

पहिला हिस्सा

सलिल और मनोरंजन कहानियोंका संग्रह
जिसको

श्रीमद्विद्यासम्पन्नश्रीः श्रीयुतजानसी नेस्फाल्ड साहब बहादुर
अवधदेशीय पाठशालाओंके मुख्य इन्स्पेक्टरकी आज्ञा-
नुसार मुंशीअम्बिकाप्रसाद साहब जिला लखनऊके
डिप्युटीइन्स्पेक्टर ने

हिन्दी शिक्षावलीको प्रचलित हिन्दोस्तानी
भाषा में शोधकर लिखा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी ॥

जून सन् १८८३ ई०

गणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः
श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः
श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः
श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः
श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः श्रीगणेशाय नमः

श्रीगणेशाय नमः

Bal lecha

बालशिक्षा ॥

पहिला हिस्सा

सलिल और मनोरंजन कहानियों का संग्रह

जिसको

श्रीमद्विद्यासम्पन्नश्री श्रीयुतजानसी नेस्फाल्ड साहब बहादुर
अवधदेशीय पाठशालाओंके मुख्य इन्स्पेक्टरकी आज्ञा-
नुसार मुंशीअम्बिकाप्रसाद साहब जिला लखनऊके
डिप्टीइन्स्पेक्टर ने

हिन्दी शिक्षावलीको प्रचलित हिन्दोस्तानी
भाषा में शोधकर लिखा

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी ॥

जून सन् १८८३ ई०

संक्र	विषय	पृष्ठ
२८	आसफुद्दौलह का हाल, ...	तथा
२९	मच्छर और मधुमक्खी, ...	१५
३०	जुगराफियः अवध, ...	१६
३१	तीनदुर्बुद्धियों का हाल, ...	१७
३२	हलमछली, ...	तथा
३३	नाइतिफाकी, ...	१८
३४	कहानी, ...	तथा
३५	सआदतअलीख़ां, ...	१९
३६	माली की हाज़िर जवाबी, ...	तथा
३७	अवध के ज़िले, ...	तथा
३८	सुलक अवध के शहर और क़सबे, ...	२१
३९	चीनकी दीवार, ...	२३
४०	सब, ...	२४
४१	कहानी, ...	तथा
४२	आयुका वर्णन, ...	२५
४३	गाज़ीउद्दीनहेदर	२७
४४	मौनता अर्थात् चुप रहने का फल, ...	तथा
४५	मुहम्मद अलीशाह, ...	२८
४६	हाथी की बुद्धिमानी, ...	२९
४७	इमान्दारी, ...	तथा
४८	हिन्दुओंका पुराना हाल, ...	३०
४९	भेड़िया और कुत्ता, ...	३१
५०	फ़रेब, ...	३२
५१	बिद्या का गुण, ...	३३
५२	सुखता का फल, ...	३५
५३	समय की प्रशंसा, ...	तथा

भूमिका ॥

— — —

आज कल बड़े २ बुद्धिमान् और विद्यामान् लोगों की यह सम्मति है कि सब प्रकार की पुस्तकें विशेष करके सरिस्ते तालीम की पुस्तकें ऐसी भाषा में लिखी जाय जिसको हिन्दोस्तानी कहते हैं अर्थात् उर्दू वा हिन्दी अक्षरों में जहाँ तक हो सके एकही शब्द लिखे जाय और वह शब्द संस्कृत वा हिन्दी हों वा अरबी फ़ारसी के परन्तु ऐसे हों कि जो बहुधा बोल चाल में आते हों और जिनको प्रायः सब लोग समझ सकते हों और इसका विचार न रक्खा जाय कि हिन्दी लिखावट में फ़ारसी व अरबी के शब्द न आवें और उर्दू लिखावट में हिन्दी वा संस्कृत के ॥

सो सयाने एक मति होतेही हैं जिस विद्वान् की आज्ञानुसार यह पुस्तक शोधी गई उसकी भी ऐसेही अनुमति है इसी से जान बूझ कर इस पुस्तक में फ़ारसी और ब्रजभाषा वा अरबी और संस्कृत के शब्द मिलाकर लिखे गये जिसमें किसी को इसके अर्थ समझने में विशेष कठिनता न पड़े ॥

— — —

बालशिक्षा पहिला हिस्सा ॥

पाठ पहिला ॥

सफाई ॥

हर एक लड़के को चाहिये कि सुबह उठके हाथ मुंह धोये और साफ कपड़े मोटे हों या महीन पहिनके पढ़ने को जाय सफाई से रहना बहुत अच्छी बात है जिस आदमीके जीमें सफाई होती है उसका सब आदर करते हैं और बीमारियोंसे भी वह बचता है जब कोई लड़का साफ कपड़ा पहिनके उस्ताद के पास जाता है तो वह उसे अपने पास अच्छी जगह बिठाता है और दिल लगा के उसे पढ़ाता है मगर जो लड़के मैले रहते हैं उन को कोई अपने पास नहीं बैठने देता और हर जगह उनकी बेकदरी होती है ॥

पाठ दूसरा ॥

कहानी ॥

एक गरीबका लड़का हाथ मुंह धोके और बहुत साफ कपड़े पहिनके मदरसे में रोज जाया करता था मुदरिस उसको ऐसा साफ देख के उस पर बहुत मेहरबानी करता था और अच्छी तरह पढ़ाता और अपने पास बिठा-

६

बालशिक्षा ।

ताथा इसलिये उस लड़केने कुकुरोजमें अच्छी तरह लिखना पढ़ना सीखलिया फिर उसके उस्तादने खुश होके उसको अपना नायब मुकर्रर किया देखो सफ़ाई और मेहनत का क्या जल्दी उसने फल पाया ॥

पाठ तीसरा ॥

सिकन्दर का हाल ॥

सिकन्दर बादशाह जिसका नाम तमाम दुनिया में जाहिर है बड़ा बुद्धिमान और बहादुर था उसने फारस का मुल्क जीतके हिन्दोस्तान पर चढ़ाई की और पंजाब में कई लड़ाइयाँ हिन्दू राजाओं से जीतीं जब सतलज नदीके पार उतरके आगे बढ़ना चाहा तो उसकी फौज राजी न हुई और उस का हुक्म न माना तब लाचार होके अपने मुल्क को फिर गया वह भी पण्डितों का सन्मान करता था और सबसे ज़ियादह अपने उस्ताद अरस्तू को मानता था ॥

पाठ चौथा ॥

उस्ताद का अदब ॥

कहावत है कि एक दिन किसीने सिकन्दर से पूछा कि आप अपने बापको ज़ियादह मानते हैं या गुरुको उसने जवाब दिया कि गुरुका दर्जः ज़ियादह जानता हूँ क्योंकि बापने तो सिर्फ मुझको पाला है पर उस्ताद से तमाम इल्म व अदब पाया जिस से इस दर्जे को पहुंचा लड़कोंको चाहिये कि मा और बापकी हमेशः

बालशिक्षा ।

७

इज्जत करें और जिस आदमीसे कि दोनों चीजें मिलें
यानी विद्या और ज़िन्दगी उसकी और भी इज्जत करें ॥

पाठ पांचवाँ ॥

सूर्य का बयान ॥

सूर्य ज़मीन से बहुत दूर और बहुत बड़ा है उससे
गरमी और रोशनी हम को पहुँचती है जिस जगह
जितनी सीधी किरणें उस की पड़ती हैं उतनी ही
गरमी वहाँ अधिक होती है देखो सुबह को जब कि
आफ़ताब की किरणें तिरछी होती हैं तब उतनी गरमी
नहीं होती जितनी दोपहर को जब सूर्य शिरपर होता
है और किरणें उसकी सीधी ज़मीन पर पड़ती हैं
जिस तरह सूर्य से ज़मीन रोशन और गर्म होती है
उसी तरह चाँद को भी रोशनी और गरमी उस से
पहुँचती है ॥

पाठ छठा ॥

पद्य ॥

निद्रित जीवन सों कहत रबि यह प्रातःकाल ।
अब उठि करहु प्रयत्न सब निज २ कर्मसुचाल ॥
अति श्रमकरि काटहु दिवस प्राप्त होय जेहिं बित्त ।
निशिको ऐहै बहुरि वह समय शयन सुखचित्त ॥

पाठ सातवाँ ॥

बरगद का पेड़ ॥

बरगद का दरख्त हिन्दोस्तान में बड़ा अजूबा है

इस दरख्त की डालों से जटा ज़मीन की तरफ लटकती हैं और जब ज़मीनपर पहुँच जाती हैं तो जम के जड़ें होजाती हैं गुजरात के देश में नर्मदा नदी पर एक बहुत बड़ा पेड़ बरगद का है वह कबीरदास के नामसे मशहूर है इसलिये उसे कबीरबड़ कहते हैं उसके दर्शनका एक मेला होता है हजारों हिन्दू यात्री वहां इकट्ठे होते हैं वह दरख्त इतना बड़ा है कि सात हजार आदमी उसकी छाया में रह सकते हैं ॥

पाठ आठवां ॥

औलादका हक ॥

बाप माको वाजिब है कि अपने लड़कोंको लड़कपन से अच्छी तालीम दे और अदब सिखायें कि जवानीमें वे खराब न हों एक आदमी अपने बुढ़ेबाप को मारताथा लोगों ने उसे बुरा भला कहा और बोले कि तू बड़ा मूर्ख और नालायक है जो बाप के अदबका हक नहीं अदा कर सक्ता उसने जवाब दिया कि उसने मेराहक अदब सिखाने का कब अदा किया था जो मैं उसका हक अदा करूं सच है लड़कों पर मा बापकी क्रूर करना सब तरह उचितही है वे चाहे पण्डितहों चाहे मूर्ख पर बगैर सिखलाये ऐसी बात लड़कोंकी समझमें आना कठिन है ॥

बालशिक्षा ।

६

पाठ नवां ॥

मूर्खता का वर्णन ॥

पद्य ॥

मूर्खकी है दुर्दशा पृथ्वीतल में जान ॥
इनकहाँ जगमें होत नहिँ सुधन प्रतिष्ठामान ॥
यह बिचारिकै कहें बुध सुनहु सकल दैकान ॥
जो नर बिद्यानहिँ पढ़ें करें बुरे नित काम ॥
हेचित जोतू बुद्धिवर सावधान जो होय ॥
तौ मूर्ख संगति तजौ भलोक है सब कोय ॥

पाठ दशवां ॥

राजा विक्रमाजीत का हाल ॥

राजा विक्रमाजीत जिनको वीर विक्रमादित्य भी कहते हैं उज्जैन में पँवार के बंशमें पैदा हुये थे संवत् इसी राजाके समयसे शुरूआत हुआ है विद्या की उसने बड़ी क्रदरकी चौदह बड़ेनामी पण्डित उसकी सभा में थे उनमें सब से ज्यादा मशहूर कालिदास कवि था जिसकी शकुन्तला नाटक और मेघदूत और रघुवंश किताबें आज तक प्रसिद्ध हैं और इन किताबों का बहुत देशों की भाषाओं में तर्जुमः हुआ है ॥

पाठ ग्यारहवां ॥

कुबड़े बुढ़े का बयान ॥

एक कमज़ोर राह में चला जाता था बुढ़ापे से कमर उसकी झुकी हुई थी एक जवानने हँसी से पूँछा

कि मियाँ झुकेहुये क्या ढूँढ़तेहो कहा बाबा जवानी खोगईहै उसे ढूँढ़ताहूँ सच है किजो वक्त गुज़र गया फिर हाथ नहींआता और इसी तरह भूलमें उमर गुज़र जाती है और पक़्तावा बाक़ी रह जाता है आदमीको दुनियाँ की ज़िन्दगीपर भरोसा न करना चाहिये और वह काम करना चाहिये जिस्सेनामनेक बाक़ी रहजाय ॥

पाठ बारहवां ॥

जमीनका वर्णन ॥

यह ज़मीन देखने में चपटी दिखाई देती है पर अस्ल में बेल की तरह गोल है इसके बीचो बीच में पूरब और पश्चिम जितने देशहैं उनमें हमेशाह सूर्य की किरणें सीधी पड़तीहैं इससेवहां बहुत गर्मीरहा करती है और उन देशोंसे उत्तर दक्षिण की तरफ जितने मुल्क जितनेही दूरहैं उतनीही वहां कम गरमी होतीहै यहांतक कि जो मुल्क उत्तर औरदक्षिण बहुत दूरीपर हैं वहां कभी गर्मी नहींहोती है और इतनी सरदी रहतीहै कि उसी मुल्क के लोग उसे सहसक्ते हैं ॥

पाठ तेरहवां ॥

आजाद फ़क़ीर ॥

एक फ़क़ीरनेकिसी आदमीसे सवालकिया कि मुझे

कुछ दे उसने बहुतसी गालियाँ दीं वह क्रक्रीर बोला
अच्छा बाबा जैसा दोगे वैसा पाओगे ॥

पाठ चौदहवाँ ॥

लोहे का बयान ॥

लोहे से अधिक फायदेवाली धातु दुनियाँ में नहीं है जो विचार करके देखो तो कोई काम ऐसा नहीं कि बिना लोहे की मदद के हो सके दुनियाँ में धन और सब चीजों की शोभा लोहे के सबब से है जिस मुल्क के लोग लोहे को नहीं जानते वे बहुत गरीब होते हैं न खेती कर सकते हैं न कपड़ा वगैरह बना सकते हैं लोहा खानि से निकलता है और उसमें मिट्टी और पत्थर मिला रहता है जो ऐसा लोहा यहां के आदमी देखें तो न पहिचान सकें कि यह लोहा है या पत्थर परन्तु जब उस को तेज आँच से गलाते हैं तो लोहा साफ़ अलग होजाता है हिन्दोस्तान में लोहा बर्दवान उड़ीसा और कमाऊँ में निकलता है ॥

पाठ पन्द्रहवाँ ॥

भूल ॥

सुस्ती और भूल का फल बुरा है क्योंकि भूलने-वाले और सुस्त आदमी का हर एक काम खराब होता है और कभी उस को बुद्धि व ज्ञान नहीं आता हर एक संगति में उसका निरादर होता है सुस्ती और भूल से शर्म के सिवा और कुछ नहीं मिलता जैसा कि

इस कहानी से ज़ाहिर है एक दिन नदीके किनारे पर एक कछुए और चौगड़ा में यह बाज़ी लगी कि देखें उस टीले तक जो यहां से कोस भर है कौन पहिले पहुँचता है उसी समय दोनों बराबर वहांसे चले और थोड़ी देर में चौगड़ा कछुए से बहुत आगे निकल गया चौगड़ा यह सोचा कि मैं बहुत जल्द दौड़ता हूँ और कछुआ अभी बहुत दूर है जब तक वह यहां पहुँचेगा मैं ठिकाने पर पहुँच जाऊँगा राह में सो रहा परन्तु कछुआ एक पल भर कहीं नहीं ठहरा धीरे २ बराबर चला गया आखिर को उस टीले तक पहुँच गया और चौगड़ा सोता रहा जब उसकी आंख खुली तो अपनी सुस्ती पर बहुत पछताने लगा और शर्माया ॥

पाठ सोलहवाँ ॥

अहमक़ का लतीफ़ा ॥

एक अहमक़ का ऊंट खोगया उसने शुक्र किया लोगों ने पूछा भला यह कौन शुक्रकी जगह है कहने लगा शुक्र इसलिये करता हूँ कि मैं उस पर सवार न था नहीं तो मैं भी खोजाता ॥

पाठ सत्रहवाँ ॥

शाहजहाँ बादशाह देहली का बयान ॥

इस शहरको शाहजहाँ बादशाहने यमुनाके किनारे पर बसाया शहरपनाह की दीवार करीब ७ मील के है मुसलमान बादशाहों के समय में यह नगर बहुत

दिनतक सारे हिन्दोस्तान की राजधानी रहा मुग़लों के बंश से सिराजुद्दीन अबूज़फ़र यहां के पिछले बाद-शाह थे उनको लाख रुपये महीनः पेंशन सरकार अँगरेज़ी से मिलते थे सिर्फ़ क़िलअ के अन्दर उनका बन्दोबस्त रहताथा मगर सन् १८५७ ईसवीमें बलवे के सबब सेवे रंगून भेजेगये और वहीं मरे अब सारे नगर में सरकार अँगरेज़ी की हुकूमत है ॥

पाठ अठारहवाँ ॥

बदख़त का हाल ॥

पद्य ॥

यक लेखक सों कोउ जन । कही बात यह जाय ॥
 एक पत्र लिखि देहु म्वहिं । मम स्वारथ बनि जाय ॥
 शीत साँस यक खींचि वह । बोला तबहिं तुरन्त ॥
 पाँवन मेरे पीर अति । होत अहहि बुधिवन्त ॥
 यासों मैं नहिं लिखि सकत । मीत तुम्हारो पत्र ॥
 और कतहुं तुम जाय अब । ठूढ़हु अर्थ बिचित्र ॥
 बोला सो जन आपको । वृथा कहों अनुबन्ध ॥
 कहहु पत्र अरु पाँव सों । कौन होय सम्बन्ध ॥
 लेखक बोल्यो सुनहु भो । क्रोध दूरि करि देहु ॥
 मैं तुम सों जो कहहुं अब । तेहिको चित धरि लेहु ॥
 कारण यह मैं लिखत अस । पढ़ै न पावत कोय ॥
 काहू कहँ कछु जब लिख्यो । ताकी अस गति होय ॥

उसके पढ़ने के लिये । परत आय जब काम ॥
मोही कहँ जाना पड़त । केहू बिधि वह ठाम ॥

पाठ उन्नीसवाँ ॥

मोती का बयान ॥

हिन्दोस्तानमें लंकाकेकिनारे समुद्रसे मोती निकाले जाते हैं ज्येष्ठ बैशाख में बुढ़वे वा मरजिया उनको निकालते हैं मोती सीपमें पैदा होता है अक्सर मुल्कों के सौदागर उन दिनों में वहाँ मोती खरीदने को इकट्ठे होते हैं और दो महीने तक बड़ा मेला रहता है मकान उस टापू में बाँस के बनते हैं और नारियल के पत्तों से छाये जाते हैं फ़ारस मुल्क के किनारे आरमुज़ में भी मोती निकलते हैं लेकिन वहाँका बादशाह उनकी सौदागरी का कुछ बन्दोबस्त नहीं करता ॥

पाठ बीसवाँ ॥

पानी का बयान ॥

पानी जीनेका एक सबब है शल्लः फल फूल वगैरह पानी से पैदा होते हैं परन्तु जानना चाहिये कि पानी जब खराब होता है तो उसमें ज़हर के बराबर गुण होजाता है जो उस पानीको पीवे झट बीमार होजाय पानी की खराबी का कारण यह है कि जब उसमें घास फूस या पेड़ के पत्ते गिर कर सड़ जाते हैं तो वह पानी खराब और मैला होजाता है और उसका असर जहाँतक हवा में फैलता है हैज़ा वगैरः बीमारी

पैदा करता है और कुओं में भी यही दोष आजाता है इसकारण पानी की खबरदारी जरूर है कुओंमें कूड़ा या पत्ते वगैरः न गिरने पावें और ऊपरभी उनके चारों ओर सफाई रहे जहाँ कहीं अच्छा पानी न मिले तो पानी को ओटाकर पीवे और जो यहभी न बनपड़े तो छानके पीने से भी बहुत फायदा है ॥

पाठ इक्कीसवाँ ॥

माता पिताकी प्रीति ॥

किसी समय एक गाँव में आग लगी सब लोग अपना २ माल व असबाब लेकर भागे उस गाँव में दो भाई बड़े मालदार रहते थे वहभी अपना माल व असबाब बाँधकर भागने के विचार में थे कि आग उनके मकान के पास पहुँच गई वह असबाब लेके भागनेही चाहतेथे कि इसमें उनकी आँख अपने बुढ़े मा बाप पर पड़ी कि वह मकान के एक कोने में पड़े हैं यह हाल देख के एक भाई ने दूसरे से कहा कि माल और असबाब तो हमको फिर मिल जायगा पर मा बाप फिर न मिलेंगे यह कहके उन्होंने असबाब फेंकदिया और एकने मा को और दूसरेनेबापको अपने कन्धों पर उठालिया और उसआगसे बाहरलेनिकले ॥

पाठ बाईसवाँ ॥

अकबर बादशाह का वर्णन ॥

अकबर हिन्दोस्तान के मुसलमान बादशाहों में

बहुत नेक और मुन्सिफ़ था बहुधा रात भर वह नहीं सोता और बिद्याकीचर्चा रखताथा मेहनतीभी ऐसाही था कि अजमेर से आगरेतक एकसौदश कोस बराबर दो दिनमें घोड़े पर चलागया अक्सर क्रानून की किताबें भी उसने बनाईं उनमेंसे आईनअकबरी बहुत मशहूर है राजा बिक्रमाजीत की तरह से उसके भी दरबार में बड़े २ अक्रमन्द लोग इकट्ठा थे उनमें से राजा जयसिंह बहादुरी में बीरबल बहादुरी और दिल्लगी में फ़ैज़ी और अबुल्फ़ज्जल इल्म व हिक्मत में मीरखुसरो शाअरीमें बहुत प्रसिद्ध थे ॥

पाठ तेईसवाँ ॥

लकड़हारे और मौतकी मुलाक़ात ॥

एक मज़दूर धूपमें लकड़ी का गट्टा लिये जाता था चलते २ बोझों के मारे थकगया और दुःखसे घबराके शिरसे गट्टे को फेंक के कहने लगा कि जो इस जीने से मौत आजाती तो अच्छाथा-उसी क्षण मौत आदमी का रूप बनके सामने आ खड़ी हुई और कहने लगी तू ने मुझे क्यों बुलाया है मौत को देखतेही मज़दूर घबराया और जवाब दिया कि मैंने आपको इतनेही के वास्ते बुलायाहै कि कृपाकरके यह गट्टा उठा दीजिये ॥

पाठ चौबीसवाँ ॥

जामअ मसजिद ॥

दिल्ली शहरमें बड़ी मशहूर इमारत जामअमसजिद

है यह शाहजहां बादशाहके समय में तैयारहुई और दशलाख रुपया उसमें खर्च हुये इस के बीच में संगमरमर का एक होज़है और दोनों ओर इस मसजिद के दो मीनार हैं जिन की उँचाई एकसौ फ़ीट है और तमाम मसजिद की लम्बाई दोसौ सोलह फ़ीट है भीतरका फ़र्श संगमरमर और संगमसा का बना है मीनारोंके ऊपर जानेके लिये एक सौ तीस पेंचदार सिङ्ढियां लाल पत्थर की बनी हैं सर्कार अंगरेज़ी ने इस मसजिदके खर्च के वास्ते एक वसीकः बांध दिया है यह मसजिद सारे संसार की मसजिदोंसे सुन्दर समझी जातीहै ॥

पाठ पच्चीसवां ॥

स्वप्न ॥

पद्य ॥

सोवत में काहूयहदेखा । यकशैतानकियोअतिवेखा ॥
अयफिद्वेशबुरेगुणवाला । मुझकोक्योंतैंकियोबिहाला ॥
क्रोधकियोऔदियोतमाचा । पुनिकरसोंपकड़ेमुखकाँचा ॥
औफिरदियोतमाचाकड़का । तबआखेंखुलगईबेधड़का ॥
जबदेखीदाढ़ीनिजहाथा । मनमलीनभोलज्जितगाता ॥

पाठ छब्बीसवाँ ॥

काशज ॥

जबतक काशज नहीं बनाथा लोग भोजपत्र और ताड़ के पत्तों पर लिखतेथे पहले पहल रुईका काशज

चीन वाले बताने लगे उनसे अरब के लोगोंने सीखा उसके पीछे अंगरेजोंने कागज़ बनाना जाना बलायतमें बहुत अच्छा कागज़ महीन कपड़ोंके चीथड़ोंसे बनाया जाता है और मोटा कागज़ टाटसे, इस देश में बहुधा कागज़ रुई वा टाटपानीमें गलाके बनाते हैं हिन्दोस्तान के अगले राजाओं के समयमें सनदें तांबे या पीतल के पत्रोंपर खोदी जाती थीं और इंगलिस्तान में आज कल बड़ी २ सनदें ऐसे कागज़ पर लिखते हैं जो चमड़े से बना है यह कागज़ बहुत मज़बूत होता है पाँच छः सौ वर्षतक रहता है ॥

पाठ सत्ताईसवाँ ॥

लालच ॥

किसी लालची की मुर्गी रोज़ एक सोने का अण्डा देती थी उसने समझा कि ऐसे तो धन बहुत दिनों में इकट्ठा होगा जो इसका पेट फाड़के सब अण्डे एकही बार निकाल लूं तो जल्द अमीर हो जाऊं इस लालच से उसने मुर्गी का पेट फाड़ कर उस को मार डाला पछतावे के सिवाय कुछ हाथ न लगा देखो लालच ने उसको ऐसा अन्धा किया कि बहुतसा धन तो किनारे रहा जो रोज़ मिलता था उसको भी खो दिया ॥

पाठ अट्ठाईसवाँ ॥

आसफ़ुद्दौलः का हाल ॥

नवाब आसफ़ुद्दौलः शाह देहलीके वज़ीर और सूबे-

दार कहलाते थे उनसे पहले अवधका हाकिम फ़ैज़ा-
बादमें रहताथा परंतु आसफ़ुद्दौलः लखनऊ में रहने
लगे और उसे खूबबसाया एक बहुत अच्छी इमारत
जिसे बड़ा इमामबाड़ा कहतेहैं वहां बनाई वह मकान
रणेयत के पालने के लिये उन दिनोंमें बनायागयाथा
कि जब बहुतबड़ा अकालपड़ाथा सिवा उसकेएकनहर
करबलामें उन्होंने बनवाई उसको नहरआसफ़ी कहते
हैं गुणी लोगों का उन्होंने ने बड़ा सत्कार किया और
बहुत रुपया खर्चकरके एक कुतुबखानःभी इकट्ठा किया
और उनके समय में जनरल मारटीन साहब ने भी
अच्छे २ मकान लखनऊ में बनवाये ॥

पाठ उन्तीसवां ॥

मच्छर और मधुमक्खी ॥

जाड़ेके दिनोंमें एक मच्छर भूखसे तंग आके मधु-
मक्खियों के पासगया और उन से कहा कि जो तुम
थोड़ा शहद हमको दो तो हम तुम्हारे लड़कोंको गाना
सिखायें मक्खियोंने कहा कि आप कृपा कीजिये हम
अपने लड़कोंको मेहनत करना सिखावेंगे जिस में
हमारी तरह शहद इकट्ठाकरें जो समय पड़ेपर उनके
काम आवे गाना जानने से तुम्हींको क्या लाभ हुआ
कि जोहम अपने बालकोंको सिखायें जैसे तुम भीख
माँगतेहो वैसेही वेभी मुहताज रहेंगे आदमी को
चाहिये कि अपनीसन्तानको वहचीज़सिखाये जिससे

उसको बहुत फ़ायदा हो बेकामकीचीज़ सिखानामानो
उनके साथ बैर करना है ॥

पाठ तीसवाँ ॥

जुगराफ़ियः अवध ॥

सूबः अवध नैपाल और गंगा के बीचमें है इसदेशमें
चौबीस हजार बर्गात्मक मील धरती है और एक
करोड़ चौदह लाख सात हजारछःसौ पच्चीसके करीब
आदमी हैं ब्राह्मणों की बस्ती इसमें बहुत है राजपूत
उनसे कम हैं पहले इस मुल्कका हाकिम फ़ैजाबाद में
रहताथा जिस के पास अयोध्या तीर्थ स्थान है जहाँ
राजा रामचन्द्र पैदाहुयेथे अब हाकिम यहां का लख-
नऊ में रहता है इस देशकी प्रसिद्धनदियां ये हैं घाघरा
या सरयू, गोमती, सई, टेढ़ी और कल्याणी आदि
धरती इस सूबेकी बराबर है कोई पहाड़ नहीं है यह
मुल्क बहुत हराभरा है यहां अनाज सब प्रकार का
उपजता है और और देशोंको भेजाजाता है रुई बहुत
नहीं पैदाहोती परंतु यमुना के नज़दीक के मुल्कों से
बहुत आतीहै ॥

बालशिक्षा ।

२१

पाठ इकतीसवाँ ॥

तीन दुर्बुद्धियों का हाल ॥

पद्य ॥

मूरखतीनमनुजयकबारा । चलेजातककुकरतबिचारा॥
अतिबिचित्रमदिरतेहिठाईं।निरखिएकजड़कहतढिठाईं॥
तबके राज रहे असभारी । जो पृथ्वीसेसदन सँवारी ॥

दोहा ॥

कहत दूसरो बचन अस सुनु निलज्ज यहबात ।
यह पहिले रचिघरणिपर पुनिउठाय यहज्ञात ॥

सवैया ॥

यहदेखिकरेंआश्चर्यसबै त्यहिऔसरतीसरबातकही ॥
यहकूपअनूपममानकही सबलोगनउलटिदयोजबहीं ॥
मीनारभयोतबनामइसे जड़आदतऐसी अहैजो मही ॥
जड़आपनपण्डितमानतहींनिजऐबकोध्यानकरेंहैनहीं॥

पाठ बत्तीसवाँ ॥

कैल मछली ॥

कैलमछली बहुत बड़ी अर्थात् तीसहाथ लम्बी और
इतनीही चौड़ी होती है पूंछ उसकी आठ गज चौड़ी
और मुँह उसका चौदह हाथ लम्बा होताहै उस को
समुद्र में रहनेसे लोग कहने को तो मछली कहते हैं
मगर वह मछली की नाईं अण्डे नहीं देती बल्कि बच्चे
जनतीहै आदमी उसका शिकार करतेहैं और उसकी

२२

बालशिक्षा ।

चरबीकी बत्ती बनातेहैं इन बत्तियों की रोशनी साफ़ होती है औरये दूर २ के देशों में काममें लाईजातीहैं यह मछली बहुधा शीतदेशों के पास समुद्रमें रहती है और कभी २ गर्म मुल्कोंके नज़दीकभी पाईजातीहै ॥

पाठ तैंतीसवाँ ॥

नाइत्तिफ़ाक़ी ॥

फूट संसारमें एक ऐसा अपराधहै कि इससे बड़े २ घर नाश होजाते हैं राज्य बिगड़ जाते हैं बैरी बड़े बलवान् होजातेहैं आदमीको चाहिये कि दुश्मन और मतलबीकी बातपर न चले और अक्लमन्दकी नसीहत को गाँठमें बांधे और उसपर चले और जहाँ तक हो-सके फूटसे बचारहे हिन्दोस्तान नाइत्तिफ़ाक़ीके सबब से हमेशः ग़ैरक्रौमों के बशमें रहाहै ॥

पाठ चौंतीसवाँ ॥

कहानी ॥

एक राजा ने मरते समय अपने लड़कों को बुला के एक मज़बूत रस्सी उनकोदी और कहा किसब मिलके इसे तोड़ो सभोंने मिलके ज़ोर किया परंतु वह न टूटी उसने रस्सीको खोलडाला और एक एक लड़ हर एक लड़के कोदी औरकहाकि अबतो इसेतोड़ो सबने सहज में अपनी २ लड़को तोड़डाला उस वक्त बादशाह ने कहा कि देखो इसी तरह जबतक आपसमें मिलेरहोगे तबतक तुमको कोई न तोड़ सकेगा और जोफूट पड़

बालशिक्षा ।

२३

जायगी तो ज़रा से झिटके में जैसे यह लड़ टूट गई है
वैसेही टूट जावोगे ॥

पाठ पैंतीसवाँ ॥

सआदतअलीख़ा ॥

आसफ़ुद्दौलः के कोई औलाद न थी इसीसे उनके
भाई सआदतअलीख़ा को अंगरेजोंने बनारस से बुला
कर लखनऊका नव्वाब बनाया यह बुद्धिमान् थे परन्तु
लालची बहुत थे खर्च बेकाम उनके समयमें नहींहुआ
और बाईस किरोड़ रुपयके लगभग उन्होंने खज़ाने
में इकट्ठा कियाथा कैसरबाग़के पास लखनऊमें उनकी
क़बर बनीहै यह नव्वाबही कहलाते थे बादशाह की
पदवी उस समय तक न थी ॥

पाठ छत्तीसवाँ ॥

मालीकी हज़िर जवाबी ॥

एक आदमी ने माली से पूछा कि तूने छोटे पेड़ोंको
रस्सीसे क्यों खींचकर बाँधाहै जवाब दियाकि बेढंगे
न बढ़जायँ सचहै कि यही दशा आदमियों की है जो
बचपन से सुराह पर न लगाये जायँ और सुवाल के
वास्ते अच्छी तरह न दबाये जायँ तो जवानीमें अपने
मनके होकर बुरे कामोंकी ओर झुकजाते हैं ॥

पाठ सैंतीसवाँ ॥

अवध के ज़िले ॥

अवधके चारबड़े हिस्सेहैं उनमेंसेहरएकको क़िस्मत

वा कमिश्नरी कहते हैं एक २ क्रिस्मत वा कमिश्नरीमें
तीन २ जिले हैं ब्यौरा उनका यह है

नाम क्रिस्मत नाम जिले

लखनऊ	लखनऊ खास,	उन्नाम,	बारहबङ्की
रायबरेली	रायबरेली खास,	प्रतापगढ़,	सुल्ताँपुर
फ़ैजाबाद	फ़ैजाबाद खास,	गोंडा,	बहिरायच
सीतापुर	सीतापुर खास,	हरदोई,	खीरी

यहाँके सबसे बड़े हाकिम को चीफ़ कमिश्नर कहते हैं
जो सबके हाकिम हैं उनके नीचे एक मददगार हैं जिनको
जुडीशल कमिश्नर कहते हैं वे दीवानी व फ़ौजदारीके
मुक़द़मे फ़ैसल करते हैं मालका काम और कुल सूबे
का बन्दोबस्त चीफ़ कमिश्नर आप करते हैं हर एक
क्रिस्मत में एक २ कमिश्नर रहते हैं जिनके सामने
बड़े २ मुक़द़मे पेश होते हैं जैसे खून और डकैती
वग़ैरह और उन्हींके सिपुर्द उस देशकी आमदनी
की जाँच है उनके नीचे हर एक जिलेमें एक २ डिपुटी
कमिश्नर हैं और उनके मददगार असिस्टण्ट कमिश्नर
एक्स्ट्रा असिस्टण्ट कमिश्नर और तहसीलदार आदि हैं॥



* मुदरिर्सों की चाहिये कि जिन २ जगहोंके नाम इसपाठ वा दूसरेपाठ
में लिखे हैं उन्हें लड़कोंकी नक़्शोंमें अच्छीतरह दिखलावे और समझावे ॥

बालशिक्षा । पाठ अड़तीसवाँ ॥

२५

मुल्क अवध को शहर और क़सबे ॥

अवधके सूब:में दोहीबड़े शहर हैं एक लखनऊ दूसरा फ़ैज़ाबाद लखनऊ गोमती नदीपर बसा है और सब से बड़ा शहर है (२५८०००) आदमी बसते हैं नवाब आसफ़ुद्दौल: बहादुर के समय से पहिले यह शहर एक छोटासा क़सबा था परन्तु नवाब साहब ने इसको राजधानी बनाया तबसे इस क़सबेकी बहुत बढ़ती हुई और इसमें अच्छी २ इमारतें भी हैं फ़ैज़ाबाद घाघरा और सरयू नदीपर बसता है यह शहर अगले वक्तमें अवध की राजधानी था और मन्सूर-अलीख़ाँ बहादुर की अमल्दारी से पहिले जो दूसरे नवाब अवध के हुये अयोध्या के नाम से मशहूर था लेकिन नवाब साहब ने पुरानी अयोध्या के पश्चिम ओर थोड़ी दूरपर यह शहर बसाया और इसका नाम ईरान देश के अपने जन्मभूमि के नाम से फ़ैज़ाबाद रक्खा अब फ़ैज़ाबाद और अयोध्या एक शहर के दो किनारे हैं जिनमें (१६००० + ३८०००) आदमी बसते हैं ॥

दूसरे क़सबे बड़े २ मुल्क अवधके ये हैं ॥

ज़िले लखनऊ में काकोरी मलिहाबाद ये दोनों क़सबे लखनऊ से पश्चिम और उत्तर हैं ॥

ज़िले बारहबंकी में--बारहबङ्की, दरियाबाद, रुदौली ॥

ज़िले उन्नाममें--उन्नाम, सफ़ीपुर, पुरवा ॥

ज़िले सीतापुर में--सीतापुर, खैराबाद, मिश्रिष, मिश्रिष हिन्दुओं की तीर्थयात्रा का स्थान है ॥

ज़िले हरदोईमें--हरदोई, शाहाबाद, बिलग्राम, बिलग्राम बहुत दिनों से विद्या के वास्ते प्रसिद्ध है इस क़सबेके नामी विद्यावान् ये थे मौलाना अब्दुलज़लील गुलामअलीआज़ाद मौलाना ओहदुद्दीनअदीब सिवा इनके इस ज़िलेमें दो और शहर हैं सन्दीलः पिहानी जहाँकी तलवार मशहूर है ॥

ज़िले खीरी में--खीरी, मुहम्दी ॥

ज़िलेफ़ैज़ाबादमें--फ़ैज़ाबाद व टांडा घाघरा नदीपर बसता है और कपड़ों के वास्ते मशहूर है अकबरपुर में एक क़िलअ और एक पुल टोंस नदी पर जो बादशाह अकबर के हुक्म से बनाया गया था मौजूद है जलालपुर टोंस नदी पर आबाद है ॥

ज़िलेगोंडामें--गोंडा टेढ़ी नदीके पास है बलरामपुर रावतीनदी पर, करनैलगंज सरयू नदीकेपास, नव्वाब गंज घाघरा नदी पर बसा है ॥

बलरामपुर और करनैलगंज और नव्वाब गंज में नाज का ब्योपार बहुत होता है ॥

ज़िले बहिरायच में--बहिरायच सरयू नदीके नज़दीक है इस क़सबे में सैयदसालार मसऊद गाज़ी-

की क्रबरहै यहां हरसाल एकबहुत बड़ा मेला होताहै ॥

नानपारा उत्तर की तरफहै और यहाँके रहनेवालों को नेपाल की सौदागरी से बहुत लाभ होता है ॥

खास क्रसबे बहिरायच में (१६०००) आवादीहै ज़िले रायबरेली-रायबरेली और सलोन दोनों सई नदीपर बसतेहैं और जायस रायबरेलीसे पूर्वतरफहै ॥

ज़िले प्रतापगढ़-प्रतापगढ़ सईनदीपर और मानिकपुर और गोनी गङ्गापर बसा है ॥

ज़िले सुल्तापुर और असोली यह दोनों क्रसबे गोमती नदीपर बसे हैं ॥

पाठ उन्तालीसवाँ ॥

चीनकी दीवार ॥

चीन के लोगों ने अपने दुश्मनों से बचने के लिये एक दीवार ऐसी बनाईहै कि जिससे उनकी अक्रमंदी जाहिर होती है वह दीवार दशहाथ ऊंची और सात सौ मील लम्बी है और बाज़ जगह इतनी चौड़ी है कि छः सवार उसपर बराबर चलेजायँ बहुतेरे ऐसे दरिया और पहाड़ बीचमें आपड़ेहैं कि जिनमें ऐसी इमारत का बनाना कठिन है और बड़े तअज्जुब की बात यहहै कि पाँचही वर्षमें यह दीवार तैयार हुई इस मुल्क में बैरियों से बचाव के वास्ते दीवार बनी तो भी उससे कुछ फ़ायदः न हुआ और तातारवालोंने

आकरकहीं २ अपना दखल करही लिया इससेअच्छी तरह जान पड़ता है कि मुल्कका बचाव कुछ दीवार व किलअसे नहां होता बल्किमुल्कका बचाव ईमान-दारी व बहादुरी और विद्या जानने से होता है ॥

पाठ चालीसवाँ ॥

सब्र ॥

संसार में जब कोई दुःखपड़े तो आदमी को सन्तोष करना उचित है और यह ध्यान करना चाहिये कि जब थोड़े दिन में उसको दुःख सहने की आदत हो जायगी तब इतना दुःख जान नहीं पड़ेगा कभी ऐसा भी होता है कि आदमी थोड़े कष्टसे घबराके उसे दूर करना चाहता है परन्तु उससे भी बड़ी २ विपत्ति में पड़ताहै मुसीबत दूर करनेकी तदबीर तो ज़रूर करनी चाहिये पर ऐसी जल्दी न करे कि विपत्ति और अधिक होजाय हर एक काम अच्छी तरह शोच विचार के करना चाहिये ॥

पाठ इकतालीसवाँ ॥

कहानी ॥

एक अमीर अपने आदमी को रोज़ तड़के मुर्गे की आवाज़ पर कामके लियेउठाया करता था आदमीको उससमय नींदके सबबसे उठना बुरा मालूम होताथा वह उस तकलीफ़ के दूर करने की फ़िक्रमें रहाकरता था एक दिन एक आदमी ने उसको यह सलाह दी

कि तू इस मुर्गेको मार डाल न वह रहेगा और न उसकी आवाज़ से सुबह का अन्दाज़ मिलेगा उसने उस निर्बुद्धीकी सलाहसे वैसाही किया दूसरी रातको उस के मालिक की आधीरात से आंख खुल गई मुर्ग न था जो रातका अन्दाज़ मिलता वह समझा कि तड़का होगया नौकर को उसी वक्त नींद से उठा के काम पर भेजा राह में वह आदमी अपनी बेवकूफीसे बहुत पछताया ॥

पद्य कुण्डलिया ॥

ईर्ष्या करनेहार की क्यों मैं सुनी कुवात ॥
पक्षितावे जियमें बहुत बुद्धि न दीन्हों साथ ॥
बुद्धि न दीन्हों साथ मुझे शीघ्रता लजायो ॥
भले बुरेको ज्ञान प्रथम चितमें नहिं आयो ॥
दुःख रोष बेदिली काम हर समय नशावत ॥
इनसे रहै सचेत अन्त में सो सुख पावत ॥

पाठ बयालीसवां ॥

वायुका वर्णन ॥

वायु से सब जानदारोंकी जिन्दगी है पवनके बिना कोई जीव एक क्षणभी नहीं जी सकता परंतु साफ़ और ताजीही हवा से तन्दुरुस्ती और जिन्दगी बनी रहती है खराब हवासे बीमारी ही नहीं मौत भी

हो जाती है अब जानना चाहिये कि हवा कैसे बिगड़ जाती है वायु के बिगड़ने के तीन कारण हैं प्रथम यह कि बार बार साँस लेने से और यह बात अच्छी तरह ऐसे जानी जाती है कि जो कोई जीव शीशे के बरतन में बन्द कर दिया जाय तो जो वायु उस बरतन में भरी रह जायगी वह उस जीव के बार २ साँस लेने से ऐसी बिगड़ जायगी कि वह जानदार मर जायगा इस सबब से ऐसी जगह में रहने से जहाँ पवन आती जाती न हो या आदमियों की भीड़ हो वैसीही बिगड़ होगा जैसा ऊपर की मिसाल में कहा गया ॥

दूसरे यह कि जहाँ कूड़ा या मैलापन होता है वहाँ की हवा भी बिगड़ कर बीमारी पैदा करती है और वही हवा बदन के सूराखों की राह अन्दर जाकर ज़हर होजाती है ऐसीही बिगड़ी हुई हवा हैज़ःआदि बीमारियों की जड़ है ॥

तीसरे यह कि जहाँ पेड़ोंकी पत्तियाँ वा घास पानी में सड़ती है वा खुद पानीही धूप की गरमी से सड़ जाता है वा मैला पानी बहता है वहाँ की हवा भी बिगड़ जाती है यह इस तरह जाना जाता है कि तराई और तरी की जगह में जानदार अक्सर बीमार रहते हैं इससे हमको चाहिये कि खराब हवासे बचते रहें कूड़ा वगैरः इकट्ठा न होने दें मकानों को कीचड़

पानी और पके हुये अनाज के धोवन से साफ़ रखें
मुहरियोंमें मैला पानी भरने न पावें जहाँ तक होसकें
मकान में हवा कें आने जाने का खयाल रखें ॥

पाठ तेंतालीसवाँ ॥

शाज़िउद्दीनहैदर ॥

सम्राटअलीख़ा के पीछे उनके बड़े बेटे शाज़ि-
उद्दीनहैदर अवध के मालिक हुये अँगरेजों की तरफ़
से उनको बादशाहत का खिताब मिला और उनके
नामका सिक्का जारी होकर ताज व तख़्त बादशाही
उनके लिये तैयार हुआ यह बादशाह बहुत शराबी
और अपने मुल्क से बेख़बर थे मशहूर है कि यह
कुछ झकी भी थे तेरहवर्ष राज्य करके सन् १८२७
ईसवी में उनका देहान्त हुआ और उनके पीछे मुल्क
अवध में जो हाकिम हुआ वह बादशाह कहलाया
शाज़िउद्दीनहैदर के बाद नसीरुद्दीनहैदर उनके बेटे
ने सन् १८३७ ई० तक राज्य किया ॥

पाठ चवालीसवाँ ॥

मौनता अर्थात् चुप रहने का फल ॥

एक गधे ने कहीं शेरकी खाल पाई वह उसको
ओढ़ के जङ्गल में फिरने लगा आदमी व जानवर दूर
से उसे देखके डरके मारे उसके पास नहीं आते थे
और गधा तमाम जङ्गल और खेत चरता फिरता था
एक दिन यह शोचा कि शायद मेरे न बोलने से जान-

वर यह समझें कि यह शेर नहीं है और उनके जी से डर जाता रहे इसलिये शेरकी बोली बोलनी चाही ज्योंही वह शेर की बोली बनाके बोला सब जानवर पहिंचान गये कि यह गधा है और उसके ऊपर आगिरे और गुस्से के मारे उसे टुकड़े २ कर डाला ॥

पद्य सवैया ॥

चित्तबिचारिकैमौनगहै अरुसोइप्रतिष्ठितहैजगमाहीं ॥
लोभवृथामोहादिअनेकसबैदुरिजातलखैकोउनाहीं ॥
कैसोछिपावतहैइनकोजिमिक्रोधकोदेखिकैधर्मपराहीं ॥
औरकहाँलोंबखानकरीं गुणऐसेअनेकगिनेनहिंजाहीं ॥

पाठ पैंतालीसवाँ ॥

मुहम्मद अलीशाह ॥

नसीरुद्दीनहैदर के मरने पर मुहम्मदअलीशाह उनके चचा गद्दीपर बैठे और वे पाँचवर्ष राज्य करके सन् १८४२ ई० में मर गये तब अम्ज़दअलीशाह उनकी गद्दी पर बैठे उन्होंने भी पाँचवर्ष राज्य की सन् १८४७ ईसवी में वाजिदअलीशाह अम्ज़दअलीशाह के बेटे तख्त पर बैठे परन्तु उन्होंने राज्य काजमें कुछ ध्यान न दिया भोगबिलास में पड़ गये अन्त में इस बे बन्दोबस्ती और खराबी के सबब से सन् १८५६ ई० में मुल्क उनके हाथसे निकल गया और वह शहर कलकत्ते को चले गये अब वहाँ एक लाख रुपया महीना पेन्शन पाते हैं सन् १८५६

ईसवी से अंगरेज़ लोग इस मुल्क में राज्य करते हैं ॥

पाठ किया लीसवाँ ॥

हाथीकी बुद्धिमानी ॥

हाथी बड़ा बुद्धिमान् होता है और बहुधा विचित्र काम करता है नीचे लिखी हुई कहानीसे उसकी अक्लमन्दी ज़ाहिर होती है सूरत नगरमें एक हाथी सड़क पर चला जाता था जब एक दरज़ीकी दूकानके पास पहुंचा तो उसने अपनी सूँड़ दूकान के अन्दर बढ़ाई उस समय वहां बहुतसे दरज़ी बैठे कपड़े सीतेथे किसीने एक सुई उसकी सूँड़में चुभोदी हाथी उसवक्त तो चुपका चला गया पर जब वहांसे फिरा तो कहीं से मैला पानी अपनी सूँड़में भर लाया और उस दरज़ी की दूकान पर पहुंच के वह मैला पानी इस तरह से छिड़क दिया कि जो कपड़े वे लोग सोरहेथे सब खराब होगये और वे दरज़ी बहुत पछिताये और लजाये ॥

पाठ सैंतालीसवाँ ॥

ईमानदारी ॥

एक ईमानदार गरीबका लड़का किसी अमीरके पास नौकर था एकदिन उस अमीरने उसको दो जोड़े कपड़े इनआम दिये वह खुश होकर अपने घर लाया एक तो उसने पहिन लिया और दूसरा उठार कखा जब उसने दूसरा जोड़ा बदला तो अंगरेखे की जेब में एक नोट

५०) रुपये का निकला वह उसको लेकर अमीर के पास गया और कहा कि यह नोट उस अंगरखे की जेब में भूलसे रह गया था जो हुजूर ने मुझको बख्श दिया था अमीर उसकी ईमानदारी पर बहुत राजी हुआ और उसवक्त तो उसको रूसत किया पर दूसरे दिन जब वह लड़का अपने वक्त पर फिर हाज़िर हुआ तब अमीर ने अपने साथियों के सामने सब हाल उसकी ईमानदारी का कहा और एक अंगरखा उसे और दिया और कहा कि इसकी जेब में सौ रुपये का नोट तू पावैगा उसे तू अपने खर्च में लाना देखो ईमानदारी का फल यह है कि पचास रुपये के बदले उसने सौ रुपये पाये और सबके आगे उसकी बड़ाई हुई ॥

पाठ अड़तालीसवाँ ॥

हिन्दुओं का पुराना हाल ॥

हिन्दू अस्ल रहनेवाले हिन्दोस्तान के नहीं हैं यह लोग ईरान की ओरसे आके पंजाब देश में और गंगा यमुना और घाघरा आदि नदियों के किनारों पर बसे तिस पीछे बड़े २ नगर जैसे दिल्ली, कन्नौज और अयोध्या उन नदियों पर बसाये बहुत दिनों तक यह लोग उत्तरीय हिन्दोस्तान में रहे जब उनकी बढ़ती हुई तो बिन्ध्याचल पहाड़ और नर्मदा नदी के पार होकर दखन में पहुंचे और उधर के देशों में भी फैले अस्ल बोली उनकी संस्कृत थी धीरे २ उस भाषा से

हिन्दी मरहटी बंगाली आदि भाषा निकलीं जो आज कल सारे हिन्दीस्तान में बोली जाती हैं परंतु दखन के बहुतेरे पहाड़ी देशों की भाषा जैसी तामिल और तैलंग संस्कृत से सब तरह अलग हैं ॥

पाठ उच्चासवाँ ॥

भेड़िया और कुत्ता ॥

एक भूखा भेड़िया किसी गांवके पास आया संयोग से एकमोटा ताजा कुत्ता उसे देखपड़ा भेड़िये को उस की मुटाई पर तअज्जुब हुआ और कुत्ते से पूछने लगा क्यों भाई कुत्ते तुम क्या उपाय करते हो जो ऐसे मोटे बने हो कुत्ते ने जवाब दिया कि मैं अपने मालिक की ताबेदारी करता हूं और उसका माल चोरों से बचाता हूं उसके पलटे में मालिक की मेहरबानी से तरह २ के खाने खाता हूं भेड़िये ने कहा ऐ भाई जो हो सके तो मैं भी तुम्हारे साथ तुम्हारे मालिकके यहाँ चलूँ और चैन से रहूँ कुत्ता उसे अपने साथ ले चला इत्तिफाक़ से भेड़िये ने देखा कि उस की गर्दन के चारों ओर एक लकीर बनी है और वहाँ के बाल सब उड़गये हैं भेड़िये ने पूछा भाई गर्दन पर क्या है उसने कहा कुछ तो नहीं पट्टे का दाग है यह सुनते ही भेड़िया पिछले पैरों फिरा और कहा आप जाइये मुझ को कैद होके मोटा होना न चाहिये ॥

पाठ पचासवाँ ॥

फ़रेब ॥

एक नगर से दो आदमी जिनका नाम गाफ़िल और आक्रिल था परदेश को निकले राहमें उनको एकतोड़ा रुपयों का मिल गया वह दोनों खुश हो के घर फिरे कि थोड़े दिन तक आराम करें तब फिर परदेश करेंगे एकने कहा कि यह सब रुपयः एकबारगी ले जाना अच्छा नहीं है ऐसा न हो कि पकड़े जावें इसवास्ते थोड़ा रुपयः निकाल के बाक़ी एक पेड़ के नीचे गाड़ दिया मगर आक्रिल छिपकर वह रुपयः खोद लाया और ज़मीन को बराबर करआया जब गाफ़िल के पास खर्च न रहा तो आक्रिल से कहा चलो और रुपयः निकाल लावें जब दोनों ने वहां पहुंचकर ज़मीन खोदी तो रुपयः न पाया आक्रिल ने उलटीचोरी गाफ़िल को लगाई कि तूही रुपयः ले गया है आखिर को दोनों क़ाज़ी के पास गये क़ाज़ीने आक्रिल से गवाह माँगा उसने जवाब दिया कि जिस पेड़ के नीचे रुपयः गाड़ा था वही मेरा गवाह है जो आप वहां चलिये तो वह साफ़ हाल कहेगा दूसरे रोज़ क़ाज़ी वहां गया और बहुत से लोग इस अजूबा तमाशे के देखने को इकट्ठा हुये क़ाज़ीके पूछनेपर उस पेड़से आवाज़ आई कि गाफ़िल ने रुपयः लिया है

क्राज़ी यह सुनके हैरान हुआ और समझा कि दरख्त में कुछ भेद है हुक्म दिया कि इसके चारों ओर लकड़ी इकट्ठा करके आग लगा दो जब ऐसा हुआ एक आदमी घबराके उस पेड़के खोलसे बाहर निकल आया क्राज़ी ने पूछा कि तू कौन है उसने कहा कि मुझे आक्रिल ने दरख्त में बिठलाकर सिखला दिया था कि जो कोई पूछे कि रुपयः किसने लिया है तो शाफ़िल का नाम कह देना इस बात पर क्राज़ी ने आक्रिल से रुपयः लेकर शाफ़िल को दिलवा दिया और उसको इस फ़रेब करने की बड़ी सज़ा दी ॥

पाठ इक्यावनवाँ ॥

बिद्याका गुण ॥

एक महाजन के दो लड़के थे बड़े लड़के को उसने केवल अपने घरका हिसाब किताब सिखाया और छोटेको मदरसे में भेजकर सब प्रकारकी बिद्या पढ़वाई जब वह महाजन मर गया तो उसका सब माल उन दोनों लड़कों ने आधा २ बाँट लिया तो भी मुफ़्त खानेवालों ने अपने मतलब के वास्ते उनमें ऐसी फ़ट डाल दी कि अदालत में नालिश की जो लड़का सिर्फ़ हिसाबही जानता था और अदालत के काम को नहीं जानता था उसको मुख्तार नौकर रखना पड़ा और बहुत से मुफ़्त खानेवाले भी उसके यहाँ घुसे

और उन लोगों ने धोखा देकर उसका रुपयः बहुत खर्च कराया और आप भी खूब उड़ाया परन्तु जो लड़का आप पढ़ा था और कानूनभी जानता था और कच्यहरी में आप बात चीत कर सका था उसने आप रूबकारी की और सब क्रांशज्ञात आपही अदालत में पेश किये थोड़े दिन में बड़े भाई को दुष्ट नौकरों ने लूटकर कङ्काल करदिया और छोटे भाई ने मुकद्दिमः भी जीता और खर्च करने पर भी उसके पास बहुत रुपयः बच रहा जिससे उसने फिर रोजगार करके अपना कारखानः वैसाही जमा लिया इस कहानी से अच्छी तरह जाना जाता है कि धनवान् लोगों को बिद्या की बहुत ज़ियादह ज़रूरत पड़ती है और रुपयः होने से बहुत झूठे मित्र और सलाहकार बनजाते हैं जो सिर्फ अपने मतलब के चाहने वाले होते हैं उनकी बातों पर बिश्वास न करना चाहिये ॥

(पद्य) कुण्डलिया ॥

तुलसी या संसार में मतलब को ब्यवहार ॥
जब लग पैसा गाँठ है तब लग यार हजार ॥
तब लग यार हजार यार संगहि मिलि डोलैं ॥
जब पैसा नहिं गाँठ यार मुखहू नहिं बोलैं ॥
कहैं गिरिधर कविराय जगत का याही लेखा ॥
बिन मतलब बिन गरज यार कोइ बिरलादेखा ॥

पाठ बावनवाँ ॥

मूर्खताका फल ॥

एक अमीर का एकही लड़का था वह उसे बहुत प्यार करता था प्रेम के सबब से कभी उस अमीर ने लड़के को लिखने पढ़ने की ताकीद न की वह यह बिचार करता था कि मेरा धन उसकी तमाम उमरको बहुत होगा यह पढ़के क्या करेगा जब वह अमीर मरा लड़के ने मुफ्त का धन पाया और थोड़ेही दिनों में उड़ा दिया अन्त को महाजनों से उधार लेके खर्च करने लगा पर जब वह ऋण दे न सका तो महाजनों ने नालिश करके उसे क़ैद कराया बहुत दिन पीछे क़ैद से छूटा और थोड़े दिनों तक भीख मांगता रहा संयोग से उसी नगर में काल पड़ा उस वक्त उसको भीख भी न मिली अन्तको भूखके मारे मरगया ॥

पाठ तिरेपनवाँ ॥

समय की प्रशंसा ॥

कवित्त ॥

पल एकहुजो ठहरात नहीं गति चित्त तरङ्गहुतेसरसाई ॥
पुखराजऔपन्नाकीकौनकहैमणिमाणिकहूनबराबरिपाई
जोहरिमोलकेहारिगये नरदूसरकौन जोक्रीमतगाई ॥
गुणसागरसोईपदारथहै संसारकेकाजकोजोसुखदाई ॥

दोहा ॥

गुप्त होतहै पलकमें कोउ न पावत ताहि ॥

गुज़र गया जो वक्तहै सो फिर आवत नाहि ॥
 कुटिल कुमारग चलतहै पर अकाज सों नेह ॥
 बिद्यावान भये जगत पूरब को फल येह ॥
 बालक अरु बेहोश जे अरु तरुणता समेत ॥
 इनहिं दुरावन के लिये बरणत सुनौ सचेत ॥

कवित ॥

जब बुद्धि औ ज्ञान हृदय में बसै तबहीं निज धर्म
 औ कर्म विचारो । मद क्रोध औ लोभ मोहादिकजेसब
 त्यागिकै निजपरलोक सम्हारो ॥ अनवश्यको बश्यतो
 होत नहीं जस बायुबहै तस पीठिहि फेरो । कबहुं नहिं
 चित्त में खेद करौ न कभी उसको अपमानके गेरो ॥

चौपाई ॥

जोनरसोंइसमेंबनिआवै । उद्यमकरिनिजप्राणजियावै ॥
 मित्रनसेलै जीवअधारा । छांड़ि पदारथ देइ बिकारा ॥
 बिद्या पढ़िकै सिद्धिहिसिद्धै । पूरणवय आनन्दमेंसद्धै ॥

दोहा ॥

समय न जावे हाथ सों सोई करहु उपाउ ॥
 करहि खूब दिलजान से होय जगत में नाँउ ॥
 खान पान में भूलि कै समय न खोवै आप ॥
 श्रम करिकै बिद्या पढ़ै जासों बढ़ै प्रताप ॥

इति ॥

दे० शशि वसु वसु शशि ईसवी तीस जून गुरुवार ।
 शिशु शिक्षा पूरी भई बुधजन चित हितकार ॥ १ ॥



